क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग "साकार व निराकार" की श्रेष्ठतम् पूजा है

1 मार्च, 2013 इलाहाबाद । "मानव का दृश्य रूप अदृश्य निराकार की अलौकिक अभिव्यक्ति है । अदृश्य सर्वशक्तिमान तत्व को निराकार भगवान कहते हैं जो दृश्य जगत के रूप में प्रकट हो रहे हैं। साकार का निराकार में और निराकार का साकार में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। साकार और निराकार दोनों एक ही तत्व है ।" उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय संत क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि निराकार शक्ति का गुणधर्म है अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति, अनन्त शांति, अनन्त जीवन व परमानन्द। क्रियायोग ध्यान के द्वारा साधक को अपने साकार रूप में निराकार के व्यापक स्वरूप का अनुभव होता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा साधक स्वरूप को परब्रह्म की उपस्थिति के रूप में स्वीकार करते हुए उसमें गहन एकाग्रता का विस्तार करने का अभ्यास करता है । साधना जैसे–जैसे गहरी होने लगती है वैसे–वैसे अन्तःकरण में सुषुप्त विराट ज्ञान, अनन्त शांति, असीम शक्ति का जागरण होने लगता है । यही निराकार शक्ति के व्यापक रूप की अनुभूति है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि साकार व निराकार ठीक उसी प्रकार है जैसे लहर व समुद्र का स्वरूप है। जिस प्रकार समुद्र प्रतिपल भिन्न–भिन्न लहरों के रूप में प्रकट

हो रहा है ठीक उसी प्रकार अदृश्य निराकार भिन्न–भिन्न रचनाओं के विविध आकार के रूप में प्रकट हो रहा है । समुद्र की प्रत्येक लहर जब दुबारा प्रकट होती है तो उसका स्वरूप, आकार–प्रकार पहले से भिन्न होता है । इसी तरह से अदृश्य सर्वव्यापी शक्ति जो निराकार भगवान का स्वरूप है जब पुनः दुबारा दृश्य रूप में प्रकट होती है तो उसका स्वरूप, रूप–रंग आकार–प्रकार पहले से भिन्न होता है। इसलिए कोई भी व्यक्ति जब दुबारा जन्म लेता है तो उसका स्वरूप बिल्कुल पहले की तरह नहीं होता है । कुछ भिन्नता अवश्य होती है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप में मन को केन्द्रित करने का अभ्यास साकार और निराकार दोनों की पूजा है । स्वरूप में एकाग्रता का विस्तार भगवान के साकार रूप की अनुभूति है जो निराकार का अलौकिक व्यक्त रूप है । इस प्रकार क्रियायोग ध्यान में साकार और निराकार दोनों पूजाएँ समाहित हैं ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि क्रियायोग अभ्यास के द्वारा स्वरूप में ध्यान केन्द्रित करने पर साधक के अंदर वास्तविक धन षटसम्पत्ति के रूप में प्रकट होने लगता है जिसे दम, शम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान कहा गया है । षटसम्पत्ति के प्रकट होते ही अष्टसिद्धियॉ भी प्राप्त हो जाती हैं । अष्टसिद्धियों का वर्णन शास्त्रों में अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा आदि के रूप में किया गया है । क्रियायोग ध्यान का अभ्यास कराते हुए स्वामी जी के द्वारा महाभारत, रामचरितमानस, बाइबिल आदि की वह व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है जिससे मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक बीमारियॉ दूर हो रही हैं । क्रियायोग ध्यान के कार्यक्रम को साधकों की भारी उपस्थिति के कारण 10 मार्च तक किया गया है ।

क्रियायोग सत्संग शिविर के पण्डाल में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक, कल्पवासी, तीर्थयात्री भाग ले रहे हैं। क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता